यादों का गाँव,
दूरियों की राहें,
और दिल में बसता
वो अपना घर...

घर से दूर

निरपत सिंह

BlueRose ONE.com
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Nirpat Singh 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-751-3

Cover Design: Sharvi Singh
Typesetting: Sagar

First Edition: June 2026

अनुक्रमणिका

गाँव और बचपन 1
1. मेरे गाँव में 3
2. मुझे याद है ज़रा.ज़रा 6
3. कहते है लोग 8
4. साथी मेरे बचपन की 10
5. जी नहीं लगता 12
घर से दूर 13
6. बिना कमाए 15
7. तुम्हें छोड़ वृन्दावन में 16
8. वेतन 17
9. मैं थम गया हूँ 19
10. अकेलापन 20
11. मुसाफ़िर 21
12. शौक़-ओ-शिद्दत से संभाल रखे हैं 22
13. ग़म तेरा मकदम 23
14. तजुर्बा 24
प्रेम और स्मृतियां 25
15. याद तुम्हारी आती है 27
16. तुमसे दगा करूंगा मैं 29
17. बेचारा 31

18. ऐसे जीना 32
19. दुश्मन मेरी.. 33
20. अवनी.. 34
21. पचमढ़ी 35
अन्तर्द्वन्द एवं दर्शन 37
22. ख़ुदा का पता 39
23. अर्थ राग..40
24. तिलिस्म-ए-ईमान 41
25. ख़ौफ़ की ज़द 42
26. मार डालेगी.. 43
27. समझ 44
28. कार्बन.. 45
29. भूल जाता हूँ 46
30. एक दिया जलाना होगा.. 47

गाँव और बचपन

01.
मेरे गाँव में

ठंडी-ठंडी पुरवाई चले,
कोयल गाए मद्धम-मद्धम।
संगीत पवन का बजे जहाँ,
लहराए शांति का परचम।
पंचायत जुड़ती है कहीं,
कहीं पशु सुस्ताते है,
पीपल की छाँव में...
मेरे गाँव में।।

सरसों के पीले फूल है,
खेतों में हरियाली...
फल, फूल से लदी हुई ...
वृक्षों की डाली-डाली।
पतझड़, वसंत, सावन,
ऋतुएं बागों में आतीं,
अम्बर की छाँव में...
मेरे गाँव में।।

दो पग नन्हे-नन्हे से,
पइयां-पइयां चलते है,
चलके फिर गिर जाते है।
भोली भाली और हठी,
मासूमियत है पलती,

आँचल की छाँव में...
मेरे गाँव में।।

अल्प है संसाधन,
प्रतिभा भरी अपार है।
गुत्थी का हल, बुद्धि में बल,
किन्तु सरल विचार है।
शांति से आते है, छा जाते है ,
आहट सुन लो…
कौवे की काँव में...
मेरे गाँव में।।

लगता है परिवार एक,
वो सभी प्रेम से रहते है।
सबको देते सम्मान,
राम राम वो कहते है।
अपनापन…
एक दूजे के प्रति समर्पण,
भाईचारा गाँव में...
मेरे गाँव में।।

नदी किनारा, मंद बयार,
उलझे मन, हुई अँखिया चार।
शांत मन, विचार मल्हार,
बहे चढ़े परवान प्यार,
बदले जीवन…
साथ-साथ बहते है मन,

नदिया की नाव में...
मेरे गाँव में।।

वहीं पास ऊँचाई पर,
श्रद्धा की गंगा बहती है।
'निरपत' सब जाते वहाँ,
जहाँ शांति मिलती है ।
स्वर्ग का वैभव मिले,
माता-पिता के पाँव में,
मेरे गाँव में।।

02.
मुझे याद है ज़रा.ज़रा

मैं चुलबुला-सा खिलखिलाता,
बोलता था हर घड़ी।
खेलता था, घूमता था,
करता धमाचौकड़ी,
जिसके उधम पे नानी कहती...
नौने रहो नौने ,
जिसको मम्मी गाँव भर में...
ढूंढ़ती लेकर छड़ी।
पापा कहते बड़े खिलाड़ा बन रहे,
जाओ थोड़ी करलो लिखा पढ़ी।
मैं लिखता पढ़ता, गिरता पड़ता,
बढ़ता-बढ़ता बड़ा हुआ।
छोड़ के पीछे सारी मस्ती,
अपने पैरों पर खड़ा हुआ।
अब रहता हूँ खामोश-सा,
सब खुश होते है।
कहते है मुझे शऊर आ गया,
हॉ...लेकिन मैं खुद से कितना दूर आ गया।
ये जिसकी बात हुई वो मैं ही था?
शायद !
मुझे याद है ज़रा-ज़रा...
काश जो आया है शऊर,
उससे रहता मैं जरा दूर।

काश !
फिर वो आई...
लौटा लाई,
मेरा खोया नटखट बचपन।।

03.
कहते है लोग

हो गर्मी, सर्दी,
आवारागर्दी,
करते थे हम, खेलना, खाना,
और मौज मनाना।
वो हँसी ठिठोली,
यारों की टोली।
बस मौज मस्ती,
थी अपनी हस्ती।
कहीं खो गई वो,
यारों की बस्ती।
कहते है लोग…
अब तुम बड़े हो गए हो,
क्या सच में ?
क्या यही बड़ा होना है ?
जो अपना था खोना है।
कुछ खो गया है मेरा,
क्या वो बचपन है ?
हाँ… वो बचपन है।
वो पेड़ आम का और आम की चोरी,
अब याद है आती वो माँ की लोरी।
छोटी बातों पर यारों से लड़ना,
झगड़ना,
फिर मान जाना,

बिन बात के हँसना ।
सुबह देर तक सोने की आदत ,
जामुन , बेरों की बड़ी सी दावत ।
वो गाँव की गलियां,
गलियों के लोग...
शायद ठहर गए है कहीं,
या मैं आगे आ गया हूँ ।
कहते है लोग...
'निरपत' अब तुम बड़े हो गए हो।
क्या सच में ?
क्या यही बड़ा होना है ?
हजारों बेचैनियों को पाला,
एक सुकून की तलाश मे।
हाँ... यही बड़ा होना है,
इससे तो अच्छा बच्चा ही रहता , काश मैं !

04.
साथी मेरे बचपन की

तुम आना मेरी जिंदगी में,
पर आना दबे पाँव।
कहीं रूठ न जाए,
साथी मेरे बचपन की ।।

गर्मी में फुहार बन,
पतझड़ में बहार बन।
उजड़े हुए गुलशन में,
कलियों का श्रृंगार बन।
तुम आना मेरी जिंदगी में,
जलन मिटेगी मन की।
पर आना दबे पाँव,
कहीं रूठ न जाए,
साथी मेरे बचपन की।।

सरिता की कल-कल,
ख्याल तेरा हर पल।
सुबह की धूप, पूनम की चाँदनी,
सुरों की रागनी, नई पहल।
तेरे छूने से, तेरे मिलने से,
तपन बुझेगी तन की।
पर आना दबे पाँव,
कहीं रूठ न जाए,
साथी मेरे बचपन की ।।

पा लूँ तुम्हे ज़िंदगी में...
फिर हसरत कोई क्या होगी?
पा लूँ तुम्हे ज़िंदगी में,
तो मौत भी मज़ा होगी।
आने से तुम्हारे ज़िंदगी सँवर जाएगी ,
कब से है इंतजार, हमको तुम्हारा,
सुनोगी सिहर जाओगी।
जाना... तुम आना ,
धीर-धीरे, तुम शोर न मचाना।
तुम आना दबे पाँव,
कहीं रूठ न जाए,
साथी मेरे बचपन की।।

ठहरो-ठहरो गुस्साओ ना,
पास तो मेरे आओ ना।
मिलवाता हूँ...
जिससे मिलने की कसम है तुमने खाई,
ये साथी मेरे बचपन की, कोई और नहीं,
...है तन्हाई।
आओ तुम्हे बताता हूँ , हर बात अकेलेपन की,
पर रूठ न जाए कहीं,
साथी मेरे बचपन की।।

05.
जी नहीं लगता

परिंदे आसमानों के, पिंजर में जी नहीं लगता,
नद्दी में नहाते थे, नहर में जी नहीं लगता।

अभी नादान है, उसको अभी रस्ता लुभाता है,
लगी है प्यास मंजिल की, सफर में जी नहीं लगता।

घर, गली, सखियां जहाँ बचपन बिताया था,
पिया की याद आती है, पीहर में जी नहीं लगता।

सबर का फल मोहब्बत में बहुत मीठा हुआ करता,
हमें मालूम है लेकिन, सबर में जी नहीं लगता।

वो तेरे रूह की खुशबू, गई जबसे ज़हन में है,
तबीयत हो गई ऐसी, अतर में जी नहीं लगता।

वो गाँव, घर, गलियां, खेत-खलिहान, छोड़ पीछे,
शहर तो आ गए 'निरपत,' शहर में जी नहीं लगता।।

घर से दूर

06.
बिना कमाए

बिना कमाए जो घर जाते,
सब कहते, कहीं मर जाते।

नोटो की ख़ामोशी के आदी,
सिक्कों की खनक से डर जाते।

क़िल्लत से बचने को दर-दर फिरे,
ज़िल्लत न सहते तो किधर जाते।

कितनी चोटें, कितनी मार सही,
यूँ ही नहीं पत्थर निखर जाते।

निज कह जिनकी जीभ नहीं थकती,
पहचानने से भी मुकर जाते।

देख दूर से जो आवाज लगाते,
वो भी मुँह फेरकर गुजर जाते।

काशी में सत्कर्म बिना बैकुंठ मिले,
फिर क्यों कबीर मगहर जाते।

बाप की फटी एड़ियां न देखी होतीं,
'निरपत' तुम कैसे सुधर जाते?

07.
तुम्हें छोड़ वृन्दावन में

मैं तो हो गया बहुत ग़रीब,
तुम्हें छोड़ वृन्दावन में।
अमिट छवि तेरी नैनन में,
द्वंद हाय! चल रहा है मन में,
हाय! हो गया, क्या जीवन में?
मैंने खो दिया जो था करीब,
तुम्हें छोड़ वृन्दावन में।

नेत्र पटल रात्रि में खुलते,
अश्रु कपोल घाटी में ढलते,
प्राण ही है जो नहीं निकलते।
मेरे बिगरे...
बने नसीब,
तुम्हें छोड़ वृन्दावन में ।

अधरों पर वंशी न रुकती,
लता न अब वृक्षों की झुकती,
सूझती न अब कोई युक्ति,
याद में 'निरपत' बना अदीब,
तुम्हें छोड़ वृन्दावन में।।

08.
वेतन

कुछ व्यापार के वास्ते,
कुछ नौकरी के रास्ते।
छोड़ आते है वो घर, वो गली...
जहाँ के हर हिस्से में बसतीं है,
तमाम यादें,
क्या मिलता है यहाँ आ के ?
कुछ पैसे ...
क्या इन पैसों के बदले सिर्फ काम करना होता है ?

नहीं...
वो चुकाता है इसके एवज में,
अपनों से दूर रह।
उसके अपने चुकाते है,
उससे दूर रह ...
छोटे मोटे मौकों पर जब नहीं होता वो,
कितने छोटे-छोटे मौके निकलते है,
जब याद आता है वो।
ख़लती है कमी उसकी,
बरखा के बाद की वो उजली हरियाली,
शाम, रात, सहर निराली,
खेतों पर होरों का भूजना,
वो मटर का पुलाव,
वो सर्दी में अलाव,
सब याद आता है।

वो...!
जिसको खिलाया जाता है,
घर पर नरेशों की तरह,
फिरता है, खाता है, पेट भरता है,
न भी अच्छा लगे तब भी...
कितना कुछ अदा करता है,
उस वेतन के वास्ते।
हॉं... इस काम के अलावा...
वेतन के वास्ते ।।

09.
मैं थम गया हूँ

न जाने मैं क्यों आज थम सा गया हूँ,
स्थिर हुआ हिम-सा जम-सा गया हूँ।

रिश्तो में दहशत या दहशत में रिश्ते,
डर से शहर में सहम सा गया हूँ।

विरासत में मुझको मिला खूब कितना...
मगर आज कुछ थोड़ा कम सा गया हूँ।

ये क्या भूख है कि जो मिटती नहीं है,
मिटाते-मिटाते स्वयं मिट-सा गया हूँ।

अपनों को अब मैं हटाने लगा हूँ,
हटाते-हटाते स्वयं हट सा गया हूँ।

कहाँ से चला था, कहाँ आ गया हूँ,
मैं उड़ने चला था सिमट सा गया हूँ।

चला था परिंदा डगर ढूंढने को,
डगर तो मिली जड़ से कट सा गया हूँ,
मैं बट-सा गया हूँ।

बट-बट के बटने में रम सा गया हूँ,
न जाने मैं क्यों आज थम सा गया हूँ।।

10.
अकेलापन

मैं, जीवन...
और अकेलापन,
अनवरत अक्षत,
बचपन से यौवन,
वरदान है, अभिशाप है क्या पता?
कितनी बार ये रूठा मुझसे...
कितनी बार ये छूटा मुझसे...
आ जाता है बढ़ता चलता,
नहीं छोड़ता मुझे अकेला,
कहीं अकेलापन।

मैं, जीवन...
और अकेलापन,
साथ रहेंगे और, साथ चलेंगे,
जीवन से मरण,
कभी भी होंगे,
नहीं अकेले,
मैं, जीवन...
और अकेलापन ।।

11.
मुसाफ़िर

कैसे रुक जाऊं मैं,
कि मेरा सफर बाकी है।
मेरी नज़रों पे अभी,
उसकी नज़र बाकी है।
गम नहीं छोड़ कर...
गए तुम क्यूँ?
खुश हूँ चेहरे पे तेरे,
मेरा असर बाकी है।
निकले मरने को घूम,
आए जहाँ सारा हम।
मौत आई नही...
कि तेरा शहर बाकी है।।

12.
शौक़-ओ-शिद्दत से संभाल रखे हैं

शौक़-ओ-शिद्दत से संभाल रखे हैं,
ज़ुबां पर मेरे कई सवाल रखे हैं।

भर जाएं ना कुरेदता हूँ रोज शब-ए-वक्त,
मैंने सीने में कई जख्म पाल रखे हैं।

नौकरी जरिया-ए-जिंदगी है और कुछ नहीं,
वैसे हुनर-ओ-सुखन भी कमाल रखे हैं।

हाथ खाली देख उसको रंग दिया हमने,
क्या पता था होठों पर गुलाल रखे हैं।

क्या पता , क्या होगा उसका जवाब?
ख़त उसकी किताब में बहरहाल रखे हैं।

अंजाम ज़हर होगा एक रोज, थी खबर,
'निरपत' ने आस्तीन में सांप पाल रखे हैं।।

13.
ग़म तेरा मकदम

चलते-चलते चलने से तक़दीर आख़िर फल गई,
ज़िंदगी ज़िल्लत से कितनी दूर आ निकल गई,
बूंद-बूंद ग़म पिला-पिला कर पाला था मैंने उसको,
दरिया-ए-ग़म देखकर खुशी से पिघल गई।

मशगूल-ए-ग़म थी शख्सियत तेरे आने से बदल गई,
मैं मुस्काया तो सबको मेरी मुस्कुराहट खल गई,
ग़म तेरा मकदम, तेरा एहसान, तेरा शुक्रिया,
'निरपत' को जो रिश्तों की हक़ीक़त पता चल गई।।

14.
तजुर्बा

आसमान में चमक रहा जो चांदी सा,
उसके हाथों का चूड़ा भी हो सकता है।

खुले रखो... चोटी करो एक या दो भी जचतीं है,
लंबे-लंबे बालों का जूड़ा भी हो सकता है।

सीरत ने सूरत से हँसकर कह डाला,
रूप तो ढल कर कूड़ा भी हो सकता है।

सच कहने पर मार मिली हो बचपन में,
बड़ा हुआ तो झूठा भी हो सकता है।

आंधी में फड़फड़ा के बुझने से पहले,
दिए ने आड़ को ढूंढा भी हो सकता हैं।

मूढ़ को गद्दी मिली विरासत में जब-जब,
तख्त सिमट कर मूढ़ा भी हो सकता है।

तजुर्बा उम्र देती है सरासर झूठ है 'निरपत',
मेंढक कुए में बूढ़ा भी हो सकता है।।

प्रेम और स्मृतियां

15.
याद तुम्हारी आती है

जब सुबह देर से उठता हूँ,
तो याद तुम्हारी आती है।

जब खाना स्वयं पकाता हूँ,
तो याद तुम्हारी आती है।

थककर बिन खाए सो जाऊं,
तो याद तुम्हारी आती है।

सर दर्द हो , सो न पाऊं,
तो याद तुम्हारी आती है।

तुम होतीं मुझे उठा देतीं,
तुम होतीं मुझे खिला देतीं।

गोद में सर रख बाम लगा,
थपकी दे मुझे सुला देतीं।

जब गर्मी में लू लग जाए,
तो याद तुम्हारी आती है।

सर्दी में सर्दी लग जाए,
तो याद तुम्हारी आती है।

जब भी मैं गलती करता हूँ,
तो याद तुम्हारी आती है।

जब कभी सफल मैं होता हूँ,
तो याद तुम्हारी आती है।

माथे पे पट्टी चढ़ा देतीं,
अदरक का काढ़ा पिला देतीं।

गलती पर मुझे डांट देती,
तुम होतीं खुशी बांट लेती।

कैसे कह दूँ मुझको कितनी...
याद तुम्हारी आती है।

देखे 'निरपत' खुदको तो,
' माँ ' याद तुम्हारी आती है।।

16.
तुमसे दगा करूंगा मैं

कल तुमसे दगा करूंगा मैं,
खुद का विश्वास हरूंगा मैं।
तय सजा मेरी क्या करें कोई,
खुद ही बे-मौत मरूंगा मैं।
वो कायनात में कहाँ कोई?
जिसको अपना समझूंगा मैं।
बिन साथ, हे नाथ! अनाथ हूँ मैं,
क्यूँ इतना बड़ा बनूंगा मैं,
कि तुमसे दगा करूंगा मैं।

वो दिन...
भूलू कैसे, कैसे भूलू,
क्या भूल के पाप करूंगा मैं।
बिन आपके जाप करूं कैसे,
क्यूँ जाप विलाप करूंगा मैं।
कल, कल-कल बहे रहे खुशियाँ,
क्यूँ ऐसी दुआ करूंगा मैं।
आशीष आपका रहे सदा,
हाँ, ऐसी दुआ करूंगा मैं।
न तुमसे दगा करूंगा मैं।

कल उंगली पकड़ चला था मैं,
कल हाथ पकड़ चल दूंगा मैं।
कल मालिश करी थी हाथों से,
कल हाथों को मल दूंगा मैं।
मैं लायक हूँ, नालायक हूँ...
जैसा भी जो भी बालक हूँ।
थोड़ी चिंता तो बनती है,
क्यूँ चिंता मुक्त रहूंगा मैं।
नहीं अलग-थलग रहना मुझको,
मिलजुल संयुक्त रहूंगा मैं।
तुमसा ही जगा करूंगा मैं,
ना तुमसे दगा करूंगा मैं।।

17.
बेचारा

मैं पथिक प्रेम पथ मेरा है,
गुलशन की अधखिल कलियों पे,
गुंजन भँवरा रथ मेरा है।
मैं ओझल जैसे रंग भूरा ,
न समझो रस्ता की धूरा ।
मैं बदरा नीले अम्बर का,
बरसूं काम करूं पूरा।
भरा हूँ, जैसे आब हूँ,
मैं एक अधूरा ख़्वाब हूँ।
प्यासा एक पपीहा हूँ,
तृप्ति स्वाति की बूँद-बूँद,
अश्रु बूँद नक्षत्र की...
पीता हूँ आँखें मूँद-मूँद।
न कवि कहो, न शायर तुम,
तुम कह दो मुझको आवारा,
मैं अडिग, अलग अपनी धुन में,
न मुझे कहो तुम बेचारा।।

18.
ऐसे जीना

जिंदगी के सफर में अकेले न चलना,
ये लंबा सफर है ऊब जाओगे।

जिंदगी के समंदर में अकेले न उतरना,
ये गहरा समंदर है डूब जाओगे।

तन्हा को दरिया का आब है ये जिंदगी,
मरुथल की रेत का सैलाब है ये जिंदगी।

सफर में हमसफर का तुम हाथ थाम लेना,
बड़ी दूर सहर है शूब जाओगे।।

19.
दुश्मन मेरी

इतनी शिद्दत से नफरत की उस शख्स ने,
कि हमको उससे मोहब्बत हो गई।
जब निकले उसको खोजने,
तो खुद ही खो गए।
अब ढूंढते हैं खुद को,
हम क्या से क्या हो गए।

इतनी शिद्दत से दुश्मनी निभाई उस शख्स ने,
कि हम ख़ुद को ही भूल गए।
वो आए कत्ल करने तो,
हम उनमें हो मशगूल गए।
फिर सोचा वो नादान है,
हाथ काट ना ले अपना।
उसके खंजर वार से पहले ही,
हम ख़ुद फंदे पर झूल गए।।

20.
अवनी

तेरी आंखों की हया,
सांसों की गरमी,
होंठों की नरमी,
नटखट अदा,
और बेशर्मी,
बड़ा याद आते हैं।
तेरे बालों से छनते वो झिलमिल उजाले,
कानों पे लटके वो टिमटिम से बाले।
वो आंखों में सुरमा,
वो आंखों के प्याले,
बड़ा याद आते हैं।
तेरे पहलू में सोना,
मेरा खुद को खोना,
तेरे साथ हँसना,
तेरे साथ रोना,
वो सारे पलों में तेरा साथ होना,
बड़ा याद आते हैं....
तुम बड़ा याद आती हो।।

21.
पचमढ़ी

घड़ी-घड़ी...
पचमढ़ी,
याद आता है मुझे।
इसलिए नहीं कि वो...
जगह बड़ी हसीन थी।
हरे भरे पेड़ थे,
घाटियां पहाड़ियां,
पठार वो जमीन थी।

जटाशंकर, गुप्त महादेव, चौरागढ़,
बी फॉल, पांडव केव, धूपगढ़,
सूर्यास्त बेला के...
दृश्य मनमोहक, झांकियां मनोहारी,
वो जंगलों के रास्ते,
वो सर्द हवा तुमसी प्यारी।
इसलिए नहीं...
कि वो शांत वन एकांत था।
या की इसीलिए...
की वो पावन परम प्रांत था।

इसीलिए घड़ी-घड़ी,
पचमढ़ी...
याद आता है मुझे।
हाथ हाथों में लिए,
साथ थी तुम मेरे,
हर जगह हर कही।
तुम साथ थी तो हर
जगह सुंदर, सरल रास्ते हो गए।

घड़ी-घड़ी,
पचमढ़ी...
याद आता है मुझे।
याद आता है मुझे,
वो हर पल साथ बिताया जो ....

अन्तर्द्वन्द एवं दर्शन

22.
ख़ुदा का पता

मंदिर, मस्जिद, गिरजा, द्वारे…
इमारतें मज़हबी,
इनसे कायम नफ़रत का मुकाम है।
बेसब्र हो ख़ुदा से मिलने को
तो मोहब्बत करो…..
मोहब्बत ख़ुदा का दूसरा नाम है।।

विवश का सहारा बन,
कभी निशक्त के काम आकर देखो।
ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे भीतर है,
कभी तुम भी भीतर जाकर देखो।।

23.
अर्थ राग

जल रहा चिराग,
राग छेड़ दो।
बोलतीं हैं, खोलतीं हैं,
राज सारी वस्तुएं।
देश में विदेश से,
आज सारी वस्तुएं।
आ रही ले जा रही,
अनाज सारी वस्तुएं।
वस्तुओं से वास्तु का,
दोष हो रहा...
देश खो रहा...
दोष को मिटाओ,
घोष करो जोश में,
बुझ न पाए आग,
राग छेड़ दो।
जल रहा चिराग,
राग छेड़ दो।।

24.
तिलिस्म-ए-ईमान

मंजिल-ए-मुकम्मल को रास्ते तमाम हैं,
क्यूँ लोग चुनते हैं कि जिनमे मेहनतें हराम हैं?

पैर के छाले नहीं सब सूट-बूट देखते,
पीठ पीछे गलियां सामने सलाम है।

मुँह सिकोड़ते जो देख, हाल पूछने लगें,
गरज है उनकी कि उनको तुमसे कोई काम है।

सराहता नही है कोई ग़म ना कोई कीजिए,
सराहना खुदी को ख़ुद के वास्ते इनाम है।

रास्ते चुने जहाँ जमीर जीवता रहे,
हाथ काले, कद बड़ा चर्चा सरेआम है।

माथे चमक रहा पसीना 'निरपत' डर नहीं मेहनत का हो,
वजूद न बचा सकीं शाखाएं जड़ें बदनाम हैं।।

25.
ख़ौफ़ की ज़द

किस दौर में है आ गए,
कैसे बयां करें।
कुछ तो हो जिसे थाम,
जिगर कारवां करें।
एक खौफ सताता है,
शब-ओ-रोज़ उसे तो,
वो घर से जुदा हाय!
कैसे बेटियां करें।
सूखीं हैं पलक अभी चार रोज़ हुए हैं,
फिर से आँखों को चलो आब-ए-रवाँ करें।
कोसेंगे जमाने को चार रोज फिर सभी,
भूल जाएंगे क्यों याद खामखां करें।।

26.
मार डालेगी

शरीफों को शराफत का ढिंढोरा खूब आता है,
किसी दिन इन शरीफों को शराफत मार डालेगी।

नज़र की शोखियाँ हमको भला कब लूट पाई हैं,
हक़ीक़त उसके नैनों की नज़ाकत मार डालेगी।

मरना भी नहीं आता, है जिनको खौफ मरने का,
हमें बेखौफ रहने की ये आदत मार डालेगी।

वो हँसते हैं तो लगता है जहाँ में सबसे आला हूँ,
ख़ुदा न हो कभी समझूं ये आफत मार डालेगी।

स्याही सियार है तुम सोच कर ही मूंदना आँखें,
यकीं ज्यादा करोगे तो सियासत मार डालेगी।

हक़ीक़त से कहीं ज्यादा अफसानों को लिखती है,
कलम को इल्म है शायद हक़ीक़त मार डालेगी।

उसे मैं चाहता हूँ...
हाँ! मगर कहता नहीं कुछ भी,
मुझे डर है ये चाहत,
उसको 'निरपत' मार डालेगी।।

27.
समझ

रात सुलाती है सहर जगाती है मुझको,
एक रोज आएगा सहर सुलायेगी मुझको।

जी भर कर जो चाय पिलाती है मुझको,
जी भर जाएगा तो ज़हर पिलाएगी मुझको।

दर पर खड़े सहर दोपहर शाम रात भी आई,
पूछती है नज़र बता किस पहर बुलाएगी मुझको।

दौलत हो मोहब्बत हो कि हुनर हो राज़ रखता हूँ,
जान जाएगी दुनिया तो नज़र लगाएगी मुझको।

शक्कर लाने भेजा था मैं नीम उठा लाया,
चुनने की ये बेसब्री सबर सिखाएगी मुझको।

समझदार कह कर उसने जलील कर दिया,
'निरपत' समझ, समझ तेरी सफर कराएगी तुझको।।

28.
कार्बन

दुनिया की बातें हमको बताते हो,
हमारी बातें किसको बताओगे?

पूछता हूँ मै ज़ुबां से टाल दो,
आँखो से बात को कैसे छुपाओगे?

हमसे न पूछो कितना प्यार है?
पानी में डूबोगे ख़ुद ही जान जाओगे।

ताले लगा दो क़ैद कर लो 'नीर' को,
वाष्प बना तो कैसे पकड़ पाओगे।

कार्बन ही हूँ बस वक्त का खेल है,
कोयला हूँ तो ठुकराते हो 'निरपत'
हीरा बनूंगा तो सर बिठाओगे।।

29.
भूल जाता हूँ

जो थी खामी अब वो खूबी लगती है,
हर बात भूलना आदत मेरी बचपन से।

हर बात ज़हन में पालू, पागल करती है,
पागलपन से अच्छा मुद्दा दफा जहन से।

क्या खोया, क्या पाया फेहरिस्त लंबी है,
लेकिन तौबा जोड़, घटाना, भाग, गुणन से।

मोबाइल, टीवी, बिजली बिल हुआ पुराना,
अब रिश्ते रिचार्ज हुआ करते है धन से।

मीठी बातें लव पर, खंजर हाथों में,
वार यही करते है हँस के दो- मुहे फन से।

जाल बिछा कर, दाना फैला रखा है,
कब तक चिड़िया दूर रहेगी आंगन से।

इक-इक दिन में, मौत हज़ारों बार मिली,
फिर भी 'निरपत' कब हारा है जीवन से।।

30.
एक दिया जलाना होगा

अस्त हो रहा,
पस्त हो रहा,
सूर्य हर उम्मीद का।

गमों की गहराइयों में,
डूबता ही जा रहा,
हर शब्द मेरे गीत का।

पत्थर-पत्थर गिर रहा है,
तिनका-तिनका उड़ रहा है,
ढह रहा है...
किला मेरे उम्मीद का।

पत्ता-पत्ता झड़ रहा है,
टहनी-टहनी उखड़ रहा है,
पेड़ हर उम्मीद का।

मैं अकेला देखता हूँ,
हर तरफ, हर कहीं,
हर कोई निराशा है।

सूर्य अस्त हो जाएगा,
अंधेरा छा जाएगा,
एक दिया जलाना होगा…
सूरज के आने तक।।